REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

"जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का अध्ययन"

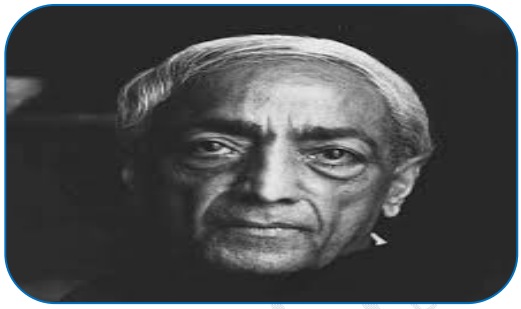

सत्यप्रकाश तिवारी[१] , डॉ. रतन कुमार भारद्वाज[२]
[१] शोधकर्त्ता, शिक्षा , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.
[२] आचार्य , संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय लाल कोठी,स्कीम जयपुर.

प्रस्तावना –

आदिकाल से मनुष्य जागरूक रहकर अपनी वाक्शक्ति का व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, समुदाय और समुदाय के बीच तथा संन्तति और संन्तति के बीच अपने व्यवहारिक अनुभव भंडार का संचार करने के लिये उपयोग करता आया है ताकि व्यक्ति का सामाजीकरण हो सके और वैयक्तिक स्मृति के माध्यम से पूरी मानव जाति जीवित रह सके। शिक्षा मनुष्य समुदाय की स्वाभाविक विशेषता रही है, उसने सामाजिक विकास के हर युग में समाज को दिशा और स्वरूप देने में सहायता दी है। स्वयं शिक्षा का विकास कभी अवरुद्ध नहीं हुआ व मनुष्य के सर्वोच्च आदर्शों को उसने प्रवाहित किया है। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रति जितनी रुचि है उतनी पहले कभी नहीं थी। आज का मानव शिक्षा को भविष्य की दृष्टि से देख रहा है क्योंकि आज की शिक्षा आर्थिक विकास की अगुवाई कर रही है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि इतिहास में पहली बार शिक्षा, मनुष्य को उस समाज के लिये तैयार कर रही है जिसका निर्माण अभी तक नहीं हुआ है। शिक्षा के लिये यह चुनौती पूर्णतः नवीन है। क्योंकि शिक्षा का अब तक का कार्य समकालीन समाज को उसी रुप में जीवित रखना और उसके सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखना था। परन्तु आज उसका लक्ष्य अपरिचित बालकों को अपरिचित दुनिया के लिये शिक्षित करना है। अतः शिक्षाशास्त्रियों के ऊपर यह दायित्व आ गया है। जिसके द्वारा उन्हें समाज के भावी स्वरूप का निर्धारण करना होगा। उनको इस दायित्व के लिये चिंन्तन करना होगा।

भारत अनेक प्रजातियों, धर्मावलम्बियों, संस्कृतियों और भाषा–भाषियों का संघर्ष स्थल और शरण स्थल बन गया। यद्यपि इस काल में अनेक भारतीय मनीषियों, समाज सुधारकों, सन्तों और विद्वानों ने भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित रखने का महान प्रयास किया। इन्होंने संगठनात्मक रूप से भारतीय शिक्षा प्रणाली की जो नींव रखी वह प्राचीन और आधुनिक शिक्षा का सम्मिश्रण थी। फिर भी भारत की अधिकांश जनता अशिक्षित थी। इसी समय भारत में ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली की नींव चार्ल्स ग्रांट और लार्ड मैकाले द्वारा तत्कालीन शासन की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर स्थापित की गई थी। सन् 1837 से मैकाले द्वारा स्थापित शिक्षा प्रणाली अनेक आयोगों और समितियों की सिफारिशों और नीतियों के फलस्वरूप आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के रूप में विकसित हुई है।

भारतीयों ने 15 अगस्त सन् 1947 में राजनैतिक स्वतन्त्रता तो अथक संघर्ष के बाद प्राप्त कर ली थी, किन्तु आत्मिक या आन्तरिक और मानसिक स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं की। जिसके अभाव में मनुष्य में प्रज्ञा और आत्मबोध का विकास नहीं हुआ। मात्र बौद्धिक विकास से भारत ने यूरोप और अमेरिका का अन्धानुकरण किया है और विकासशील हो गया। जिसके फलस्वरूप आधुनिक युग में अनेक नवीन समस्याओं का जन्म हुआ है। भारत जो कि एक परम्परावादी धार्मिक देश रहा है उन समस्याओं का

समाधान प्राचीन सूत्रों में खोजता रहा है जबकि चुनौतियां नवीन है, जिनका समाधान वर्तमान प्रज्ञा, अन्तर्दृष्टि, आत्मबोध और सत्यान्वेषण से सम्भव है।

भारत और विश्व में मानव जीवन की मौलिक और भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना मात्र सरकारों और समाजों का उत्तरदायित्व रह गया है। किन्तु मनुष्य की प्रज्ञा, अन्तर्दृष्टि और आत्मबोध जाग्रत करना व्यक्तिगत ही नहीं बल्कि प्रत्येक का सामाजिक उत्तरदायित्व भी है। वर्तमान शिक्षा इस उत्तरदायित्व से विमुख हो गई है इसीलिए शिक्षा का अवमूल्यन हुआ है। सत्य की खोज के अभाव में मानवीय गरिमा का मानव सभ्यता और संस्कृति का पतन हुआ है। ऐसी विषम परिस्थितियों में व्यक्ति की मुक्त प्रतिभा, अन्तर्दृष्टि और आत्मबोध से सत्य और वास्तविकता के धरातल पर प्रत्येक समस्या का सामना और समाधान किया जा सकता है। ऐसे व्यक्ति और ऐसे समाज का निर्माण सम्यक शिक्षा और सम्यक दर्शन से ही सम्भव है। भारत में ऐसे अनेक व्यक्ति, दार्शनिक और सत्यान्वेषक हुए हैं जिनमें ऐसी प्रतिभा और अन्तर्दृष्टि थी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं वरन् समग्र जीवन में आन्तरिक समृद्धि से मानव कल्याण किया है। जो भौतिक सम्पन्न सत्ताएँ भी नहीं कर सकी हैं।

जिद्दू कृष्णमूर्ति

ऐसे ही अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न महामानव थे, जिनका समग्र जीवन सत्य के लिए, आत्मबोध के लिए, मुक्ति के लिए, मानव सृजन और कल्याण के लिए समर्पित था। उनकी समग्र जीवन दृष्टि, उनका परिदर्शन और सम्यक शिक्षा भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासांगिक, प्रायोगिक, महत्वपूर्ण, सार्थक और उपादेय है। जिनके सम्बन्ध में यह अध्ययन प्रस्तुत है।

अध्ययन का महत्त्व :-

शोधकर्ता की दृष्टि में जिद्दू कृष्णमूर्ति के जीवन दर्शन एवं शिक्षाओं में वह दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक परिदृष्टि है जो न केवल वैचारिक है वरन् व्यावहारिक भी है। जिद्दू कृष्णमूर्ति ने मानव जीवन की वर्तमान समस्याओं का व्यापक अवलोकन किया है और आधुनिक विश्व की अनेक समस्याओं पर विचार विमर्श किया है। जिद्दू कृष्णमूर्ति के परिदर्शन एवं शिक्षाओं से प्रत्येक व्यक्ति में वह अन्तर्दृष्टि जाग्रत होती है, जो जीवन की प्रत्येक समस्या का सामना कर सकती है। जिद्दू कृष्णमूर्ति ने शिक्षा और दर्शन की कोई आदर्श या काल्पनिक रूप रेखा प्रस्तुत नहीं करते बल्कि जीवन से सम्बन्धित करते हुए सतत् सीखने को, स्वयं को जानने को, सत्य खोजने को और विमुक्त समग्र मानव के विकास पर बल देते हैं। जिद्दू कृष्णमूर्ति की शिक्षाएँ भारत ही नहीं वरन सम्पूर्ण आधुनिक विश्व में उपादेय है। इसलिये शोधकर्त्ता ने जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना और उसकी सार्थकता सिद्ध करना आवश्यक एवं महत्वपर्ण माना है।

अध्ययन का औचित्यः-

प्रस्तुत शोध 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का अध्ययन जिद्दू कृष्णमूर्ति जी की शिक्षाओं पर आधाारित है। जिद्दू कृष्णमूर्ति स्वयं एक अद्वितीय महामानव थे, जिन्हें विश्व के अनेक दार्शनिकों, लेखकों, विद्वानों, शिक्षकों, धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्तियों ने **'विश्व शिक्षक'** का सम्मान दिया है। मानव के समग्र प्रस्फुटन और सम्यक शिक्षा के लिये जिद्दू कृष्णमूर्ति आजीवन समर्पित रहे। इसलिये भारत सहित विश्व के अनेक देशों में उन्होंने स्वतन्त्र शिक्षण संस्थाऐं निर्मित करने की प्रेरणा दी। जिद्दू कृष्णमूर्ति युवकों की एक ऐसी पीढ़ी विकसित करना चाहते थे जो जीवन के मौलिक प्रश्नों को उठाने, समझने और समाधान करने की क्षमता प्राप्त कर सकें। उन्होंने शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों का आह्वान किया है। जिद्दू कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं में समस्त मानव जाति और समाज के पुनरूत्थान के बीज प्रच्छन्न हैं।

शोधकर्ता स्वयं एक शिक्षक है, जिसने जिद्दू कृष्णमूर्ति जी की शिक्षाएं पढ़ने और समझने के पश्चात यह अनुभव किया कि जिद्दू कृष्णमूर्ति ने शिक्षक के लिये कोई ऐसी जगह ही नहीं छोड़ी जहां स्थिर होकर वह शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्तों में उलझ सके। जिद्दू कृष्णमूर्ति ने विद्यार्थियों में और अन्ततः

समस्त मानव समाज में आमूल परिवर्तन लाने के लिये शिक्षकों पर ही यह उत्तरदायित्व सौंपा है। उन्होंने विश्व की प्रत्येक चुनौती और समस्या से पलायन करने के बजाय उनका सामना करना, समझना और समाधान खोजना सिखाया है। इस प्रकार शोधकर्ता ने जिद्दू कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं में दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, नैतिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विचारों का अवलोकन किया है। जो सर्वथा अद्वितीय, नवीन, सार्थक और उपादेय हैं।

शोधकर्ता का विश्वास है कि प्रस्तुत शोध पत्र एक पुस्तकालय मात्र में सीमित न होकर शिक्षा की पाठ्यचर्या निर्माण में उपयोगी तथा शिक्षण विधियों और शिक्षण सूत्रों को लागू करने में सहायक होगा। विद्यालय में अनुशासन और स्वतन्त्र शैक्षिक वातावरण निर्माण में सार्थक सिद्ध होगा।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शिक्षाशास्त्र विषय में जिद्दू कृष्णमूर्ति पर अब तक अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है। यद्यपि दर्शनशास्त्र विषय पर एक शोध अवश्य हुआ है। अतः शोधकर्ता को जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों पर अनुसंधान करने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

समस्या कथन :-जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का अध्ययन

शोध समस्या से उभरने वाले प्रश्न :-

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विद्यालय संकल्पना, छात्र संकल्पना, शिक्षक संकल्पना, छात्र शिक्षक सम्बन्ध, शिक्षण विधियां, अनुशासन एवं मूल्यांकन विधियां क्या है?

अध्ययन के उद्देश्य :-

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विद्यालय संकल्पना, छात्र संकल्पना, शिक्षक संकल्पना, छात्र शिक्षक सम्बन्ध, शिक्षण विधियां, अनुशासन एवं मूल्यांकन का अध्ययन करना।

शोध विधि :-

प्रस्तुत शोध कार्य में शोध का स्वरूप वर्णनात्मक रखा गया है। तथा शोध की विधि विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का परिसीमन :-

प्रस्तुत अध्ययन की भी कुछ सीमायें है जो कि निम्नलिखित है-

1. इस अध्ययन में जे. कृष्णमूर्ति के केवल शैक्षिक व दार्शनिक विचारों का अध्ययन किया गया है।
2. इस अध्ययन में जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों के अंतर्गत केवल शिक्षा, शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, जानकारी, समझ, , विद्यालय, अनुशासन, मूल्यांकन, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधियां, विद्यार्थी, शिक्षक-शिक्षार्थी संकल्पना, शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्ध पर ही उनके विचारों का अध्ययन किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन'

अध्याय-२ **'सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन'** से सम्बन्धित है। इस अध्याय में जे. कृष्णमूर्ति से सम्बन्धित विभिन्न अध्ययनों की समीक्षा की गयी है। साहित्य की समीक्षा में जे. कृष्णमूर्ति के विभिन्न चिन्तनों से सम्बन्धित पूर्व में किये गये अध्ययनों की समीक्षा की गयी है।

तृतीय अध्याय 'जे. कृष्णमूर्ति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

जे. कृष्णमूर्ति का जीवन परिचय :- जे. कृष्णमूर्ति भारतीय दार्शनिक, वक्ता और लेखक थे। अपने प्रारंभिक जीवन में उन्हें नए विश्व शिक्षक बनने के लिए तैयार किया गया था, लेकिन बाद में उन्होने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उनके विचारों में मनोवैज्ञानिक क्रांति, मन की प्रकृति, ध्यान,

पूछताछ, मानवीय सम्बन्धों और समाज में परिवर्तन लाना शामिल था। उन्होने प्रत्येक मनुष्य के मानस में क्रांति की आवश्यकता पर बल दिया और इस बात पर जोर दिया कि ऐसी क्रांति किसी भी बाहरी संस्था द्वारा नहीं लाई जा सकती, चाहे वह धार्मिक हो, सामाजिक हो या राजनैतिक हो। जे. कृष्णमूर्ति जी बीसवीं शताब्दी में विश्वभर में विख्यात हुए एक महान संत थे। अपने विलक्षण व्यक्तित्व के कारण सबके आदरणीय एक महामानव, उम्र के नब्बे वर्ष तक–यानी जीवन के अन्त तक वे बाल के जैसे निष्पाप, सरल, खुले और सहज रहे। उन्हें लगता बच्चों जैसे प्रौढ़ लोग भी सहज और निष्कपट होंगे तो दुनिया कितनी सुन्दर बनेगी। इन्हीं गुणों के कारण उनके जीवन में विश्व का रहस्य खुल गया और इसी वजह से वे केवल सारे मानवों के ही मित्र नहीं, बल्कि सभी प्राणियों, समूची सृष्टि के लिए वे अपने बने। लेकिन बालकों के तो खास हमदर्द रहे।

जिद्दू कृष्णमूर्ति जी का जन्म दक्षिण भारत में आन्ध्र प्रदेश के मदनपल्ली गांव में हुआ। कृष्णमूर्ति जी बचपन से ही आम बच्चे से हट के तथा टेक्निकल बुद्धि के थे। माँ के अवसान के बाद पिताजी, भाई लोग और बुआ के साथ कृष्णा भी अडयार में रहने आया जहां वे थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़े। सन् 1922 में कृष्णमूर्ति अपने छोटे भाई नित्यानन्द के स्वास्थ्य लाभ के लिये केलीफोर्निया चले गये और वहां ओहाई घाटी (U.S.A.) के आर्य विहार नामक स्थान के 'पाइन काटेज' में रहने लगे। अगस्त 1922 में काटेज के सामने स्थित एक विशाल पीपल वृक्ष के नीचे इन्हें गहरी आध्यात्मिक अनुभूति हुई, इस अनुभूति ने इनके शरीर एवं मन दोनों को बड़ी गहराई से प्रभावित किया। ओहाई घाटी (U.S.A.) में हुई आध्यात्मिक अनुभूति के बाद कृष्णमूर्ति के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आने लगा।

कृष्णमूर्ति जी का किसी राष्ट्रीयता, जाति, धर्म या दर्शन के प्रति कोई निष्ठा नहीं थी, और उन्होंने अपना शेष जीवन बड़े और छोटे समूहों और व्यक्तियों से चर्चा करते हुए, दुनियां की यात्रा करते हुए बिताया। उन्होंने कई किताबे लिखी, उनमें द फर्स्ट एण्ड लास्ट फ्रीडम, द ओनली रिवोल्यूशन और कृष्णमूर्ति की नोटबुक मुख्य हैं। उनकी कई बातें और चर्चाए भी प्रकाशित हुई हैं। उनकी आखरी सार्वजनिक वार्ता मद्रास, भारत में थी। जनवरी १९८६ में कैलिफोर्नियां के ओजई में उनका देहावसान हो गया। उनके भारत, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में शिक्षा संस्थान आज भी उनके समर्थको द्वारा संचालित किये जाते हैं। जहाँ उनके अमूर्त विचारों को मूर्त रूप दिया जा रहा है।

चतुर्थ अध्याय 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार'

कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार उनके दार्शनिक विचारों के उत्पाद हैं। अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर ही उन्होने अपने दार्शनिक विचारो का प्रतिपादन किया था और इन्हीं दार्शनिक विचारों की निष्पत्ति हैं उनके शैक्षिक विचार। उनका विश्वास था कि यदि इन विचारों के अनुरूप बच्चों को शिक्षा दी जाये तो निश्चित रूप से एक नूतन संस्कृति तथा नूतन विश्व का निर्माण हो सकता है। कृष्णमूर्ति का कहना है कि आज दुनिया में विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, और इन संस्थाओं में छात्रों की संख्या में अपार वृद्धि हो रही है, हजारों, लाखों की संख्या में पुस्तकें छप रही है और शिक्षण क्षेत्र में नयी- नयी खोजें हो रही है लेकिन इस शिक्षा का फल यह है कि छोटे- छोटे युद्धों के साथ- साथ, बड़े- बड़े युद्धों की तैयारी हो रही है, राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय विवादों की संख्या बढ़ रही है। जाति, धर्म, सम्प्रदाय और भाषा के नाम पर संघर्ष हो रहे हैं, साम्यवादी और पूंजीवादी व्यवस्था के नाम पर व्यक्ति- व्यक्ति के रक्त का प्यासा हो गया है, आंतकवाद, जनसंख्या, पर्यावरण, भ्रष्टाचार आदि समस्यायें मनुष्य के जीवन को और अधिक कठिन बना रही हैं। इन सबका कारण हमारी दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था है। कृष्णमूर्ति का मानना है कि विश्व की सम्पूर्ण समस्याओं की जड़ हमारी दोषपूर्ण वर्तमान शिक्षा व्यवस्था है। इन समस्याओं का समाधान अच्छी शिक्षा ही दे सकती है। जिद्दू कृष्णमूर्ति ऐसी शिक्षा देने की बात करते हैं जिससे व्यक्ति अपनी मूल प्रकृति के अनुरूप विकसित हो। शिक्षा के सन्दर्भ में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शब्द इस प्रकार हैं- ''शिक्षा का उद्देश्य है सही रिश्तों की स्थापना, केवल व्यक्तियों के बीच ही नहीं बल्कि व्यक्ति और समाज के बीच भी।

इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा सबसे पहले अपनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझने में व्यक्ति की सहायक हो।''[9]

प्रस्तुत अध्याय में कृष्णमूर्ति जी के अनुसार शिक्षा क्या है?, शिक्षा के उद्देश्य एवं कार्य, जिद्दू कृष्णमूर्ति एवं शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, विद्यालय, शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्ध एवं अनुशासन आदि का विश्लेषण किया गया है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का अर्थ :-

शिक्षा के अर्थ के संबंध में कृष्णमूर्ति द्वारा समय- समय पर व्यक्त किये गये विचारों को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है-

शिक्षा का अर्थ सत्य की खोज करना है।
शिक्षा का अर्थ मन को परम्पराओं के बोझ से मुक्त करना है।
शिक्षा का अर्थ अपने आपको जानना है।
शिक्षा का अर्थ कार्य को सम्पूर्ण मन, हृदय और प्रेम से करना है।
शिक्षा का अर्थ मेधा का उद्घाटन करना है।
शिक्षा का अर्थ समन्वित सम्यक बुद्धि को जागृत करना है।
शिक्षा का अर्थ कार्यक्षमता का विकास करना है।
शिक्षा का अर्थ जीवन के अर्थ को उसकी समग्रता में समझना है।
शिक्षा का अर्थ धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझना है।
शिक्षा का अर्थ सीखने की कला है।
शिक्षा का अर्थ आत्म ज्ञान प्राप्त करना अर्थात् स्वयं को समझना है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति तथ्यों को रटने, परीक्षा उत्तीर्ण करने और उपाधियां प्राप्त करने को शिक्षा नहीं मानते थे। इनकी दृष्टि से यह शिक्षा का एक पक्ष है जो उसे केवल रोजी-रोटी कमाने योग्य बनाता है। वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य को आत्मज्ञान कराये।

जिद्दू कृष्णमूर्ति के शब्दों में शिक्षा की परिभाषाः-

''अन्तः मन का ज्ञान ही शिक्षा है।''

शिक्षा के उद्देश्य एवं कार्य :-

जिद्दू कृष्णमूर्ति का चिंतन देश, काल, परिस्थिति एवं सांस्कृतिक विषमताओं की सीमा से परे जाकर शाश्वत जीवन को समझने में मानवता की सहायता करना है। यही कारण है कि उनके द्वारा बताये गये शिक्षा के उद्देश्यों में भी उसी शाश्वत सत्य की झलक मिलती है। उन्होने भिन्न- भिन्न स्थानों पर और भिन्न- भिन्न समयों पर शिक्षा के उद्देश्यों के संबंध में भिन्न- भिन्न रूप एवं भाषा में अपने विचार व्यक्त किये हैं। उनके अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य एक सन्तुलित मानव का विकास करना है। ऐसा मानव जो चेतनायुक्त हो जो सद्भावना से परिपूर्ण हो जो जीवन का अर्थ और उद्देश्य समझता हो, जो जाति, धर्म, सम्प्रदाय, संस्कृति, क्षेत्र आदि किसी भी आधार पर पूर्वाग्रहों एवं पूर्व धारणाओं से मुक्त हो, जो वैज्ञानिक बुद्धि, तथा आध्यात्मिकता में समन्वय स्थापित कर सकने की सामर्थ्य रखता हो, जो मानव मात्र के जीवन को सुखी बना सकता हो, जो अपने लिए नये मूल्यों का निर्माण कर सकता हो और जो एक नूतन संस्कृति तथा नूतन विश्व का निर्माण कर सकता हो।

जिद्दू कृष्णमूर्ति एवं शिक्षण विधि :-

जिद्दू कृष्णमूर्ति जी ने प्राचीन तथा प्रचलित शिक्षण प्रविधियों और शिक्षण सूत्रों को ना मानकर नवीन शिक्षण विधियों को माना है, क्योंकि उनका शिक्षण करने का तरीका मनोवैज्ञानिक रहा है, वे शिक्षा

1

को भयरहित, दबाव रहित तथा संस्कार रहित मानते हैं। आपने बच्चों में पाई जाने वाली स्वाभाविक जिज्ञासा प्रवृत्ति को पकड़ा और कहा कि सहज जिज्ञासा एवं सीखने की प्रवृत्ति बालक में प्रारम्भ से ही रहती है। जिसे अवश्य ही समझदारी के साथ प्रोत्साहन देते रहना चाहिए ताकि वह सक्रिय बना रहे, और विकृत न हो (परिसंवाद पृ. २१)

जिद्दू कृष्णमूर्ति का मानना है कि कोई भी शिक्षक किसी भी प्रकार सत्ता का भय दिखाकर बालक में सद्गुणों का विकास नहीं कर सकता इनके अनुसार सत्ता बड़ी भयानक, विनाशकारी एवं निरंकुश है। अतः सत्ता का भय दिखाये बिना छात्र में अनुशासन ले आना साथ ही उनमें आत्म सम्मान की भावना भी जाग्रत हो और जो छात्रों से सम्मान की मांग करता है तो स्वयं भी वह छात्रों का सम्मान करें जो शिक्षक स्वयं अपने को नहीं समझते यदि बालक के साथ अपने संबंध को नहीं समझते उनमें मात्र सूचनायें ही भरते रहते हैं तथा परीक्षाएं पास कराते हैं। वह नवीन शिक्षा का सृजन नहीं कर सकते। छात्र इसलिए होता है कि उसका मार्गदर्शन किया जाये यदि मार्ग दर्शक स्वयं ही भ्रान्त, संकीर्ण, सिद्धान्तों से ग्रस्त है तो स्वाभाविक है उसका शिष्य भी वैसा ही होगा जो वह है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति जी एक सीमा तक ही गुरू की महिमा को मानते हैं यदि गुरू उस सीमा से आगे बढ़ जाता है तो वही गुरू शिष्य के लिए बंधन निर्मित कर देता है। सम्पूर्ण मुक्ति के लिए गुरू का बंधन एक प्रकार की परतंत्रता है क्योंकि गुरूओं के बिना हम अपने को दिशाहीन पाते हैं और ऐसा मानते हैं कि गुरू ही हमारे पथ को आलोकित करता हैं। वास्तविक गुरू वह होता है जो अपने को आलोकित करता है और शनैः शनैः शिष्य से स्वयं को दूर करके उसे आलोकित होने की प्रेरणा देता रहता हैं।

जिद्दू कृष्णमूर्ति सत्यान्वेषी होने के साथ- साथ बहुत व्यावहारिक थे। ये अपने समय की प्रचलित शिक्षण विधियों को दोषपूर्ण मानते थे। शिक्षण के क्षेत्र में वे सबसे अधिक बल क्रिया को देते थे। उनके अनुसार करके सीखना और स्वयं के अनुभव से सीखने की विद्या ही उत्तम है।

3.4 जिद्दू कृष्णमूर्ति एवं पाठ्यक्रम :-

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए जो सम्पूर्ण मानव का विकास कर सके इसके लिए इन्होंने पाठ्यचर्या में विज्ञान एवं तकनीकी व्यवसायिक प्रशिक्षण, कला, संगीत एवं कविता को स्थान दिया है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रम में निम्न बातों पर विशेष बल दिया गया है-

1. **उद्देश्योन्मुख पाठ्यक्रम** :- पाठ्यक्रम उद्देश्य पूर्ण होना चाहिए। यदि पाठ्यक्रम निरूद्देश्य होगा तो उसे पढ़ने का कोई अर्थ नहीं है। बालकों के लिये वही विषय सामग्री उपयुक्त होती है जिससे उन्हे अपने उद्देश्य को पूरा करने मे सहायता मिलती है।
2. **अधिगम और उपयोगिता** :- पाठ्यक्रम अधिगम में सहायक और भावी जीवन के लिए उपयोगी होना चाहिए। इसकी योजना ऐसी होनी चाहिए जो बालकों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली हो। उन्होंने पाइ्यक्रम में लिखने पर बहुत बल दिया।
3. **नैतिक गुणों की शिक्षा** :- पाठ्यक्रम को बालकों में नैतिक गुणों का समावेश करने में सक्षम होना चाहिए। कृष्णमूर्ति का कहना है कि आज के युग में टेक्नालॉजी का ज्ञान भी आवश्यक है लेकिन नैतिक गुणों का विकास तो बहुत ही आवश्यक है। शिक्षा मन को संबंधित करे इसके लिए नैतिक गुणों की शिक्षा आवश्यक है।
4. **क्रियाशीलता** :- कृष्णमूर्ति का लक्ष्य बालक को ज्ञान देना मात्र नहीं था वरन् यह समझना था कि ज्ञान ही जीवन का लक्ष्य नहीं है बल्कि वृक्षों के प्रति पर्वतों के प्रति सौन्दर्य के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है। अतः उन्होंने पाठ्यक्रम में क्रियाशीलता पर बल दिया।
5. **सन्तुलित पाठ्यक्रम** :- जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार पाठ्यकम ऐसा होना चाहिए जो सम्पूर्ण मानव का विकास कर सके, इसलिए उन्होंने एक संतुलित पाठ्यक्रम को बालकों के लिए आवश्यक और उपयोगी माना उन्होंने बालक के संतुलित व्यक्तित्व की परिकल्पना की थी, जिसे संतुलित पाठ्यक्रम

के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। जहाँ बालकों को अपनी प्राचीन संस्कृति को बनाये रखना हैं वहीं आधुनिकता से जुड़ना भी आवश्यक है। इसलिए उन्होंने पाठ्यक्रम में जहाँ भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित, तकनीकी, व्यावसायिक शिक्षा को महत्व दिया। वहीं इतिहास भूगोल, कला, संगीत और कविता पर भी बल दिया।

3.5 मूल्यांकन :-

जे. कृष्णमूर्ति मूल्यांकन की प्रचलित परम्परा को स्वीकार नहीं करते हैं। क्योंकि मूल्यांकन की यह प्रणाली विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा, तुलना और महत्वाकांक्षा उत्पन्न करती है। इसमें प्रथम आने की दौड़ में, पीछे या विफल होने वाले विद्यार्थी हताशा, कुंठा, और भय से ग्रसित हो जाते हैं, जिससे उनके समग्र व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता। कृष्णमूर्ति विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं, "जब शिक्षक कक्षा में किसी दूसरे से आपकी तुलना करता है आपको उससे भिन्न कम या अधिक अंक देता है, भिन्न श्रेणी प्रदान करता है, तो ध्यानपूर्वक स्वयं का निरीक्षण करें, इस प्रकार से आपको नष्ट किया जाता है, आपकी प्रतिभाएं आपकी चेतना भीतर तक कुंठित हो जाती है।"[२] ३७

कृष्णमूर्ति यद्यपि लिखित परीक्षा पर आधारित मूल्यांकन प्रणाली के विरुद्ध है; फिर भी वे व्यावहारिक रूप से परीक्षा प्रणाली के तत्काल समाप्ति के पक्ष में भी नहीं है। क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी की प्रगति का कोई न कोई आधार और रेकार्ड तो रखना पड़ेगा। कृष्णमूर्ति शिक्षकों से यह अपेक्षा करते हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी की किस प्रकार से सहायता की जाये जिससे वह सतत सीख सके। जे. कृष्णमूर्ति ने अनेक शिक्षकों से वार्ता कर विद्यार्थियों में तुलना, प्रतियोगिता, परीक्षा भय, और प्राप्तांक परीक्षा प्रणाली को समाप्त करने पर बल दिया

जे. कृष्णमूर्ति परीक्षा प्रणाली की व्यर्थता को समझाते हुए कहते हैं, "इस प्रणाली ने परीक्षाओं की मूल्यांकन की, तुलना करने की, बाध्यता की प्रणाली ने महान सृजनशील लोगों को उत्पन्न करने में कोई सहायता नहीं की है।" अतः सम्यक शिक्षा में परीक्षा प्रणाली और मूल्यांकन प्रणाली के स्थान पर नवीन व्यवस्था की आवश्यकता है जहाँ विद्यार्थी का सीखना, प्रज्ञावान होना, और सृजनशील होना आदि महत्वपूर्ण है न कि अधिकाधिक प्राप्तांक लाना। विश्व में हो रहे शैक्षिक प्रयोगों की ओर संकेत करते हुए जे. कृष्णमूर्ति ने कहा है, "यदि हमारी अभिरुचि सक्रिय है तो हम केवल इसका ही पता लगाने का प्रयत्न नहीं करेंगे कि विश्व के विभिन्न भागों में शिक्षा के कौन से प्रयोग हो रहे हैं, वरन् शिक्षा की सम्पूर्ण समस्या के ही प्रति स्वयं अपने दृष्टिकोण को बहुत अधिक स्पष्ट करना चाहेंगे।"

अतः शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे प्रयोगों और अनुसंधान के प्रति शिक्षक, शिक्षार्थी और अभिभावकों को जागरुक होना चाहिये जिससे शैक्षिक समस्याओं का सही समाधान खोजा जा सके और शिक्षा के उद्देश्य प्राप्त किये जा सकें। इस प्रकार जे. कृष्णमूर्ति ने शैक्षिक अनुसंधानों और प्रयोगों को भी सतत् प्रोत्साहित किया है, जो आधुनिक भारतीय शिक्षा के लिये उपादेय है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति एवं विद्यालय :-

जिद्दू कृष्णमूर्ति कहते हैं कि विद्यालयों में कार्य करने वाले लोगों का एक महत्वपूर्ण कार्य यह भी है कि वे शिक्षार्थियों को उनकी आजीविका के लिए शैक्षिक विषयों की जानकारी देने के साथ- साथ उनमें सम्पूर्ण मानव जाति एवं सम्पूर्ण मानव जीवन के लिए उत्तरदायित्व का वृहद बोध करायें। उनके अनुसार एक विद्यालय का अर्थ ही है वह जगह जहाँ शिक्षार्थी मूल से प्रसन्न एवं आनन्दित रहता है, जहाँ उसको डराया- धमकाया नहीं जाता, जहाँ वह परीक्षाओं से भयभीत नहीं होता तथा जहाँ उसे एक ढाँचा या, एक पद्धति के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता। यह वह स्थान है जहाँ सीखने की कला सिखायी जाती है। अगर शिक्षार्थी प्रसन्न और आनन्दित नहीं है तो वह इस कला को सीखने में असमर्थ रहता है। कृष्णमूर्ति कहते है कि प्रधानाचार्य किसी विद्यालय का प्रकाश स्तम्भ होता है यदि

[2] जे. कृष्णमूर्ति, शिक्षा क्या है? राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ २८

प्रधानाचार्य समन्वित व्यक्तित्व वाला नहीं है तो विद्यालय का पतन होते देर नहीं लगती। प्रधानाचार्य के साथ- साथ सभी शिक्षकों को भी विद्यालय के प्रति अपने को उत्तरदायी समझना चाहिए।

जिद्दू कृष्णमूर्ति एवं शिक्षक :-

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक को सही रूप में एकीकृत मानव होना चाहिए। उसको धैर्य पूर्ण होना चाहिए उसको अपने शिष्यों से प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए और स्वयं सीखने में उसकी हर संभव सहायता करनी चाहिए। शिक्षक को छात्रों में सचेतनता और उद्यमिता लानी चाहिए। कृष्णमूर्ति कहते हैं कि एक सच्चे शिक्षक का कार्य है कि वह सत्ता के भ्रष्ट प्रभाव से दूर होकर शिक्षण कार्य करें, पढ़ाने ,बताने और सिखाने का कार्य करे तथा स्वार्थपरता और अहंकार को समझने और उनसे मुक्त करने में अपने शिष्यों की सहायता करें। आज की शिक्षा पूर्णरूपेण, प्रतियोगिता, प्रति स्पर्धा, महत्वांकाक्षा और बाह्य सम्पन्नता का संवर्धन करने में सहायता कर रही है। अतः शिक्षकों को चाहिए कि वे इस प्रकार की शिक्षा के विनाशकारी परिणामों और प्रभावों को गंभीरता से समझे तथा इससे मानवता को होने वाले दुष्प्रभावों से बचाने में यथासंभव योगदान करें।

3.7 जिद्दू कृष्णमूर्ति एवं शिक्षार्थी :-

जिद्दू कृष्णमूर्ति जी अपने शिक्षार्थी को अति महत्वपूर्ण मानते हैं। उनके अनुसार शिक्षार्थी में गुरू के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता होनी चाहिए। उसे गुरू के अनुभवों से सीखना चाहिए और सत्य की खोज में लगे रहना चाहिए उसको भयमुक्त होना चाहिए जिद्दू कृष्णमूर्ति कहते हैं कि शिक्षार्थी को बचपन से ही उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए मुक्त कर देना चाहिए। उसको अपने अनुरूप किसी सांचे में नहीं ढ़ालना चाहिए। धार्मिक विश्वास एवं कर्मकाण्ड के नियम आशाऐं और आकाक्षांए वास्तविक कर्म नहीं होते, ये सब बाधाएं है और यदि हम शिक्षार्थी का विकास इन प्रभावों से मुक्त होकर होने दे तो सम्भवतः जैसे-जैसे वह परिपक्व होगा वैसे-वैसे यथार्त की, ईश्वर की उसके स्वरूप की खोज करेगा।

3.8 शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्ध :-

शिक्षकों का दायित्व, केवल पुस्तकें पढ़ाना ही नहीं हैं। अपना विषय पढाना उनका प्रथम धर्म है। उन्हें चाहिए कि वे अपने विषय को सरस और सरल ढंग से बच्चों को पढ़ाएं। उनका दूसरा दायित्व हैं बच्चों को सही दिशा बताना। अच्छे- बुरे की पहचान करना। तीसरा दायित्व है- बच्चों को शुभ कार्यो की प्रेरणा देना। इसी प्रकार जब तक छात्र अपने शिक्षक को पूरा सम्मान नहीं देता, तब तक वह विद्या ग्रहण नहीं कर सकता। कहा भी गया है- 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्।' शिक्षक पर संपूर्ण विश्वास रखने वाले छात्र ही शिक्षक की वाणी को हृदय में उतार सकते हैं। दोनों परस्पर अपने- अपने दायित्वों को समझें- विद्या प्राप्ति का कार्य शिक्षक और छात्र दोनों के आपसी तालमेल पर निर्भर है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति एवं अनुशासन :-

कृष्णमूर्ति जी का अनुशासन-शिष्यत्व से जुड़ा है क्योंकि अनुशासन का सम्बन्ध सीखने से है, अनुशासन का अर्थ किसी चीज का अनुकरण करना नहीं है, या विद्रोह करना नहीं, बल्कि अनुशासन का अर्थ अपनी प्रतिक्रियाओं, अपनी पृष्ठभूमि और इनकी सीमाओं के बारे में सीखना और इसके पार चले जाना। लेकिन इसका सामान्य अर्थ होता है बड़ों के अनुसार स्वयं को बनाना। माता-पिता, शिक्षक जो कुछ कहते है, उसके अनुरूप चलना, किसी एक इच्छा का प्रतिरोध करना तथा दूसरे को महत्व देना, किसी कार्य को किसी विशेष तरीके से पूरा करना ही अनुशासन समझा जाता है। अनुशासन का यह भी अर्थ होता है कि बिना सोचे समझे किसी वस्तु को स्वीकार करना या किसी का त्याग कर देना। कृष्णमूर्ति जी के अनुसार बल पूर्वक थोपे गये अनुशासन को महत्वहीन तथा भयानक बताते हैं। उनका कहना है कि वास्तविक अनुशासन का निवास तो मन की अखण्ड सत्ता में निहित होता है। मन की समस्त विसंगतियों को समझने के उपरान्त ही वास्तविक अनुशासन का अस्तित्व प्रकट होता है। वास्तव में जब हमारा प्रत्येक क्रिया-कलाप समग्र में होता है तो वहां अनुशासन नाम की कोई चीज नहीं होती,

वही वास्तविक अनुशासन है, जहाँ किसी प्रकार का द्वैत नहीं होता। कृष्णमूर्ति जी का कहना है– यदि प्रेम करते है तो अनुशासन की आवश्यकता ही नहीं रह जाती प्रेम स्वयं सृजनात्मक बोध क्षमता लाता है, इसलिए वहाँ न प्रतिरोध होता है और न संघर्ष।

निष्कर्ष :–

कृष्णमूर्ति जी के अनुसार उचित शिक्षा के महत्व को समझने के लिए हमें जीवन के अर्थ को उसकी समग्रता में समझना पड़ेगा और उसके लिए आवश्यक है कि हम सीधे और सच्चे तौर पर विचार कर सकें, न कि केवल सुसंगत तार्किक ढंग से। दृढ़ता और सुसंगत ढंग से सोचने वाला व्यक्ति विचारहीन होता है, क्योंकि वह किसी प्रारूप का अनुयायी होता है वह वाक्यों को दोहराता है तथा एक लीक पर ही सोचता है। अस्तित्व को निष्कर्षों या सिद्धान्तों में नहीं समझा जा सकता। जीवन को समझने का अर्थ स्वयं अपने को समझना है और यही सही शिक्षा का आरम्भ और अंत भी है। जानकारी इकट्ठी करना तथा तथ्यों को बटोर कर, उन्हें आपस में मिलाना ही शिक्षा नहीं है, शिक्षा तो जीवन के अभिप्राय को उसकी समग्रता में देखना–समझना है परन्तु किसी समग्रता को उसके टुकड़ों के माध्यम से नहीं देखा जा सकता, जबकि सरकारें, संगठित धर्म एवं सत्तावादी दल, सभी यही करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

शिक्षा को गहरे जीवन–मूल्यों की खोज में हमारी सहायता करनी चाहिए, ताकि हम फार्मूलों से ही न चिपके रहें या नारों को ही न दोहराते रहें। क्योंकि वे मानव–मानव के बीच शत्रुता पैदा करते हैं। दुर्भाग्य से शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था हमें गुलाम, यंत्रवत और घोर विचारहीन बना रही है। हालांकि बौद्धिक रूप से वह हमें जगाती भी है परन्तु आन्तरिक रूप से वह हमें अपूर्ण, कुंठित और यंत्रवत बना डालती है, जिसमें सृजनशीलता के लिए कोई स्थान नही रहता।

शिक्षा का लक्ष्य केवल विद्वानों, टेक्नीशियनों तथा नौकरी की तलाश में लगे लोगों को तैयार करना ही नहीं है, उसका लक्ष्य ऐसे पूर्ण स्त्री एवं पुरूष बनाना है, जो भय से मुक्त हो। क्योंकि केवल ऐसे ही व्यक्तियों के बीच में स्थायी शान्ति संभव है।

कृष्णमूर्ति जी के अनुसार सम्यक शिक्षा वही है, जो विद्यार्थी की इस जीवन का सामना करने में मदद करे ताकि वह जीवन को समझ सके, उससे हार ना मान ले, उसके बोझ से दब न जाएं, जैसे कि हममें से अधिकांश लोगों के साथ होता है। लोग, विचार, देश, जलवायु, भोजन, लोकमत, यह सभी कुछ लगातार आपको उस खास दिशा में ढकेल रहें हैं, जिसमें कि समाज आपको देखना चाहता है। आपकी शिक्षा ऐसी हो कि वह आपको इस दबाव को समझने के योग्य बनाए, इसे उचित ठहराने के बजाय आप इसे समझे और इससे बाहर निकले, जिससे कि एक मनुष्य होने के नाते, आप आगे बढ़कर कुछ नया करने में सक्षम हो सकें और केवल परम्परागत ढंग से ही विचार करते न रह जाऐं। यही वास्तविक शिक्षा है।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव :–

१. जे. कृष्णमूर्ति जी का जीवन दर्शन उच्चकोटि का एवं मानवता से परिपूर्ण था वे ज्ञानी एवं एक अध्यात्मिक महापुरूष भी थे, ऐसी दशा में उनके धर्म सम्बन्धी विचार को भारतीय महापुरूषों जैसे रविन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानंद, शंकराचार्य महात्मा बुद्ध के धार्मिक विचारों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

२. जे. कृष्णमूर्ति जी के जीवन दर्शन का अन्य शिक्षाविदों के विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

३. जे. कृष्णमूर्ति जी के विचारों के स्थूल स्वरूप को उनके द्वारा स्थापित शिक्षा केन्द्रों को केस स्टडी बनाकर शोध किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कृष्णमूर्ति, जे.(2003) . अन्तिम वार्ताएं, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी

2. कृष्णमूर्ति, जे.(2008). शिक्षा क्या है ?, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
3. कृष्णमूर्ति, जे.(2000) . आन्तरिक प्रस्फुटन, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
4. कृष्णमूर्ति, जे.(1999) . आमूल क्रान्ति की आवश्यकता, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
5. कृष्णमूर्ति, जे.(1998) . काल और काल से परे, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
6. कृष्णमूर्ति, जे.(2003) . गरुड़ की उड़ान, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
7. कृष्णमूर्ति, जे.(2000). जीवन की पुस्तक, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
8. कृष्णमूर्ति, जे.(2004) . ध्यान, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
9. कृष्णमूर्ति, जे.(2002) . ध्यान में मन, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
10. कृष्णमूर्ति, जे.(2000) . परम्परा जिसमें अपनी, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
11. कृष्णमूर्ति ,जे.(2001) . युद्ध और शान्ति, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
12. कृष्णमूर्ति, जे.(2001) . प्रेम स्वयं से एक संलाप, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
13. कृष्णमूर्ति, जे.(2004) . मानवता का भविष्य, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
14. कृष्णमूर्ति, जे.(2000) . वाशिंगटन वार्ताएं, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
15. कृष्णमूर्ति, जे.(1991) . विज्ञान और सृजनशीलता, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
16. लाल, रमन बिहारी. (2007) . भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याऐं ,रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ

पत्र–पत्रिकाएँ, सर्वेक्षण, रिपोर्ट, शोध ग्रन्थ

1. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, रजत जयन्ती विशेषांक, जुलाई–दिसम्बर 2006ए इण्डियन इंस्ट्टीयूट आफ एजूकेशनल रिसर्च, लखनऊ
2. ओशो टाइम्स वार्षिकांक, (1996) . ताओ पब्लिशंग प्रा. लि. पुणे
3. परिसंवाद, जे. कृष्णमूर्ति जन्मशती विशेषांक कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
4. परिसंवाद अंक, 63.64 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
5. परिसंवाद अंक, (जनवरी–मार्च 2005) कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
6. परिसंवाद अंक, (जुलाई–सितम्बर 2005) कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
7. परिसंवाद अंक, (दिसम्बर 2006) कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
8. परिसंवाद अंक, (सितम्बर 2007) कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी

सत्यप्रकाश तिवारी
शोधकर्त्ता, शिक्षा , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

LBP PUBLICATION